Inaugural Session of National Seminar

On

Academic Libraries: Strategies for Sustainable Development in ICT Era

&

Felicitation Programme of Dr. T.N. Dubey, University Librarian

29th June 2019

मुख्य अतिथि– प्रो0 के0 एन0 सिंह यादव माननीय कुलपति, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेष।

विशिष्ट अतिथि– श्री राजवीर सिंह राठौर, विशेष कार्याधिकारी, राजभवन, लखनऊ।

बीज वक्ता (Key Note Speaker)– प्रो0 यू0 सी0 शर्मा, विभागाध्यक्ष, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, डॉ0 वी0 आर0 अम्बदेकर वि0 वि0, आगरा

अध्यक्षता– प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह, माननीय कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

रिपोर्ट

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के तत्वावधान में शनिवार दिनांक 29 जून, 2019 को विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर स्थित लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विषय मे '' Academic Libraries: Strategies for Sustainable Development in ICT Era'' नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ परम्परागत रीति से ज्ञान दीपक के प्रज्ज्वलन तथा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पार्पण के द्वारा हुआ। आर्य कन्या डिग्री कालेज की डॉ0 शिखा की टीम द्वारा सरस्वती वंदना तथा वंदेमातरम् का सुन्दर प्रस्तुतीकरण किया गया। तत्पश्चात मंचासीन मुख्य अतिथि प्रो0 के0एन0 सिंह यादव, विशिष्ठ अतिथि राजवीर सिंह राठौर , बीज वक्ता प्रो0 यू0सी0 शर्मा तथा उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे माननीय प्रो0 कामेश्वर नाथ सिंह का पुष्प गुच्छ द्वारा स्वागत किया गया। विश्वविद्यालय की प्रगति का परिचय देते हुए मंचासीन अतिथियों का वाचिक स्वागत् विश्वविद्यालय के मानविकी विद्याशाखा के निदेशक प्रो0 आर0पी0एस0 यादव द्वारा किया गया। डॉ0 यादव ने निवर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 टी0एन0 दूबे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके

योगदानों का परिचय दिया। संगोष्ठी के विषय का प्रवर्तन एवं रूपरेखा का प्रस्तुतीकरण कार्यक्रम के आयोजन–सचिव डॉ0 राम जन्म मौर्य ने किया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के बीज वक्ता के रूप मे **प्रो0 यू0 सी0 शर्मा** ने बीज वक्तव्य की शुरूआत पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विषय विवेचन मे साथ प्रारम्भ की जिससे उन्होने विषय को दो निहित पदों मे विभक्त किया और कहा कि पहला पद – पुस्तकालय एवं दूसरा पद सूचना विज्ञान है।

इसी क्रम मे प्रश्नगत शैली में विषय प्रवोधन करते हुए डॉ0 शर्मा ने कहा कि पुस्तकालयों का समाज के प्रति कर्तव्य क्या है? उनका मूल उद्देश्य क्या है? इस पर विचार करना आज का विषय है। वास्तव में अपने

उपभोक्ताओं को संतुष्ट करना पुस्तकालयों का उद्देश्य अथवा सार्थकता है। विभिन्न शिक्षा सुधार समितियों ने पुस्तकालयों के महत्व को स्वीकार किया है। लेकिन समस्या यह है कि पुस्तकालयों के सामने आज कई चुनौतियाँ आ गई हैं। अब मुद्रित सामग्री से अधिक ऑन–लाइन सामग्रियों का युग है। पहले हम पाठकों को निःशुल्क पुस्तकें उपलब्ध कराते थे आज हम सूचनाओं के बाजारीकरण के युग में पहुंच गये हैं जहाँ पुस्तकालय अध्यक्ष के सामने तकनीकि के सही उपयोग की और संसाधनों की विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता बनाये रखने की चुनौतियाँ हमारे सामने हैं। हमें आज अपने शोधार्थियों को अपडेट करना पड़ेगा। अपने मानवीय संसाधनों का अनुकूलतम विकास करना पड़ेगा। विज्ञान और तकनीकि के इस युग में पुस्तकालयों का 60 से 70 प्रतिषत उपयोग सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी है। माननीय कुलपति जी ने विशिष्ट अतिथि तथा बीज–वक्ता को शॉल तथा स्मृति चिन्ह देकर उनका अभिनन्दन किया। **प्रो0 ओमजी गुप्ता,** निदेशक, प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा **डॉ0 बी0के0 सिंह**, पुस्तकालयाध्यक्ष, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, **प्रो0 आर0पी0एस0 यादव,** निदेशक मानविकी विद्याशाखा एवं **डॉ0 राम जन्म मौर्य,** विश्वविद्यालय के सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष ने माननीय कुलपति **प्रो0 के0 एन0 सिंह** जी को शॉल, स्मृति–चिन्ह तथा दिव्य–कुम्भ भव्य–कुम्भ का स्मृति–चिन्ह प्रदान कर उनका अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम के इसी क्रम में संगोष्ठी की स्मारिका का विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया।

एत्तपश्चात निवर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष को मंच को सुशोभित करने के लिए आमंत्रित किया गया और विश्वविद्यालय की प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा के निदेशक **प्रो0 ओमजी गुप्ता** ने डॉ0 टी0एन0 दुबे के प्रति अपने भावोदगार व्यक्त करते हुए उनके पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विषय के क्षेत्र में तथा विश्वविद्यालय में उनके योगदान को उपृत करता हुए प्रशस्ति–पत्र का वाचन किया। माननीय कुलपति जी ने समस्त विश्वविद्यालय परिवार की ओर से यह प्रशस्ति पत्र निवर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 टी0एन0 दुबे को प्रदान किया। इसी क्रम में डॉ0 दुबे के सम्मान में **डॉ0 बी0 के0 सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष, इलाहाबाद**

विश्वविद्यालय तथा डॉ0 आर0 जे0 मौर्य, सहा0 पुस्तकालयाध्यक्ष, उ0 प्र0 रा0 ट0 मु0 वि0 वि0, प्रयागराज द्वारा सम्पादित एक अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन किया गया।

विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति एवं मंचासीन अतिथियों द्वारा डॉ0 टी0एन0 दुबे को शॉल एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका अभिनन्दन किया गया। उपस्थित सभी पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञानियों की ओर से **डॉ0 बी0 डी0 यादव,** बरेली ने डॉ0 टी0एन0 दुबे के साथ सम्पर्क की अपनी स्मृतियों को साझा किया और उनके अकादमिक एवं सामाजिक योगदान , उनकी उच्चकोटि की संगठन क्षमता और विनोदप्रिय ओजस्वी व्यक्तित्व के विविध आयामों की चर्चा की। डॉ0 दुबे ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा द्वारा अपने क्षेत्र में देश और समाज में अमूल्य योगदान प्रस्तुत किया है और सदैव अपने समकक्षजनों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करते रहे हैं, ऐसा कहते हुए डॉ0 यादव ने इस सम्मान समारोह में निवर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 टी0 एन0 दुबे के स्वस्थ्य एवं निरोगी जीवन और उनकी उत्तरोत्तर प्रगति के शुभकामनाएं व्यक्त की।

विश्वविद्यालय की ओर से कृषि विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक **प्रो0 प्रेम प्रकाश दुबे** ने एक समर्पित शिक्षक के रूप में डॉ0 टी0एन0 दुबे के महनीय व्यक्तित्व, उनकी विद्वता, सामाजिक शिक्षक के रूप में उनकी विशिष्ट क्षमताओं के विषय में चर्चा करते हुए उनके प्रति सम्मान व्यक्त किया। डॉ0 पी0पी0 दुबे ने अपने शिक्षक, गुरू एवं अपने नियोक्ता कुलपति दोनो ही द्वारा अपने विदाई सम्मान समारोह में आशीर्वाद प्राप्त करने वाले अति सौभाग्यशाली डॉ0 टी0एन0 दुबे के प्रति विश्वविद्यालय की ओर से दीर्घ, स्वस्थ्य एवं सार्थक उत्तर जीवन की शुभकामना व्यक्त की। डॉ0 टी0एन0 दुबे के सम्मान में प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ ''Academic Library: Collection to Connectivity '' नामक 450 से अधिक पृष्ठों के इस पुस्तक के प्रमुख सम्पादक **डॉ0 वी0 के0 सिंह** द्वारा ग्रन्थ का परिचय प्रदान किया गया और डॉ0 टी0एन0 दुबे के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। इसके प्च्यात सभागार में उपस्थित पुस्तकालयाध्यक्ष एवं सूचना विज्ञान क्षेत्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों के अनेकानेक अतिथि विद्वानों ने निवर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 टी0एन0 दुबे का माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन किया। विश्वविद्यालय एवं बाहर से आए हुए अपार जनसमूह ने डॉ0 टी0एन0 दुबे का फूल मालाओं से अभिनन्दन किया जिनमे विश्वविद्यालय के निदेशकगण प्रो0 ओमजी गुप्ता, प्रो0 पी0पी0 दुबे, प्रो0 आशुतोष गुप्ता, प्रो0 आर0पी0एस0 यादव, प्रो0 डॉ0 जी0एस0 शुक्ला, प्रो0 सुधांषु त्रिपाठी, प्रो0 पी0के0 पाण्डेय, विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक, डॉ0 एम0एन0 सिंह, पूर्व वित्त अधिकारी श्री एस0के0 त्रिवेदी, छात्र–छात्राएं, हाईकोर्ट बार एसोसिएशन, मेडिकल कालेज प्रयागराज, तथा अन्य अनेक उच्चस्तरीय संस्थानों से आए हुए विद्वानों ने निर्वमान पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 टी0 एन0 दुबे का पुष्प मालाओं से अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर डॉ0 टी0एन0 दुबे, निवर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि –

ये जुबां हमसे सी नहीं जाती,

और अब शिकायत भी की नहीं जाती।

देखिये उस तरफ उजाला है,

जिस तरफ रोशनी नहीं जाती।

शाम कुछ पेड़ गिर गये शायद,

वर्ना हम तक रौशनी नही आती।

हमको इन्साँ बना दिया तुमने,

अब शिकायत भी की नहीं जाती।

इस काव्यात्मक उदगार के साथ डॉ0 टी एन0 दुबे ने सेवानिवृति के समय सभी का आभार व्यक्त करते हुए आगे भी अपनी सेवाओं की आवश्यकता पडने पर विश्वविद्यालय हेतु प्रस्तुत रहने की बात कहते हुए अपनी बात समाप्त की।

विशिष्ट अतिथि श्री राजबीर सिंह राठौर जी ने संगोष्ठी के बारे मे चर्चा करते हुए कहा कि

आज यह विषय अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है क्योकि वर्तमान युग तकनीकी का युग है। आज के तकनीकी युग में पुस्तकालय ऐसे होने चाहिए कि उनके द्वारा प्रस्तुत सूचनाएं विश्वसनीय एवं प्रमाणिक हों, समाज की अकादमिक तथा शोध सम्बन्धी समस्त आवश्यकताओं को पूरा करने वाली हों तभी उनका उद्देश्य पूरा हो सकेगा। पुस्तकालयों हेतु उपलब्ध सीमित मानव संसाधनों का कैसे बेहतर प्रयोग किया जा सके यह हमें विचार करना है और तद्नुरूप कार्य करना है। संगोष्ठी में होने वाली चर्चा एवं इसकी संस्तुतियों के सम्बन्ध में आपने अपनी शुभकामनाएं तथा विश्वास व्यक्त करते हुए निर्वतमान पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 टी0एन0 दुबे के स्वस्थ्य, दीर्घायु एवं सार्थक जीवन की मंगल कामना की।

उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के कुलपति रह चुके मुख्य अतिथि,

तथा वर्तमान में **अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश के कुलपति मा0 प्रो0 के0 एन0 सिंह यादव** ने अपने वक्तव्य में संगोष्ठी के विषय को महत्वपूर्ण बताते हुए इसके आयोजन की सराहना की। विश्वविद्यालय के निवर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 टी0एन0 दुबे के प्रभावशाली व्यक्तित्व, विषय के क्षेत्र में उनकी विलक्षण क्षमता एवं उनकी बहुमूल्य सेवाओं की सराहना की तथा बंताया कि जब तक हथियार नहीं हो लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। पुस्तकालय सेवाओं के सन्दर्भ में नियुक्तियां बहुत कम हो रही हैं। ऐसे में इस क्षेत्र के विद्वानों की जिम्मेदारियां और बढ जाती हैं। शोध के क्षेत्र में विकास के लिए आपने सुझाव दिया कि शिक्षा नीतियां ऐसी बनायी जानी चाहिए कि समाज को सेवानिवृत्त कर्मठ विद्वान व कार्यकुशल शिक्षकों के अनुभवों का उपयोग शोध कार्य, पर्यवेक्षण कार्य तथा समाज व शिक्षा को सर्वसुलभ एवं बहुउपयोगी बनाने के लिए किया जा सके। वक्तव्य के अन्त में डॉ0 टी0एन0 दुबे के स्वस्थ्य, दीर्घायु होने एवं उज्ज्वल भविष्य की **शु**भकामना दी। इसके लिए निवर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 टी0एन0 दुबे ने मा0 मुख्य अतिथि जी को धन्यवाद दिया।

माननीय कुलपति प्रो0 के0 एन0 सिहं जी ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन मे अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ–साथ विदाई सम्मान समारोह का आयोजन एक विलक्षण कार्यक्रम है। यह एक स्वस्थ एवं आदर्श कार्यक्रम है।

इस प्रकार की स्वस्थ एवं आदर्श परम्परा की नीवं डालने के लिए डॉ0 राम जन्म मौर्य को साधुवाद देते हुए सभी को इस कार्यक्रम से सीख लेने की प्रेरणा मा0 कुलपति जी ने दी। डॉ0 टी0एन0 दुबे के लोकप्रिय व्यक्तित्व की भूरि भूरि प्रशंसा करते एुए उनके सम्मान समारोह एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के दूर–दूर के स्थानों से आये हुए मूर्धन्य विद्वानों की उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त की और डॉ0 दुबे को इतने सम्मान की प्राप्ति पर हार्दिक बधाई भी दी। संगोष्ठी के आज के विषय की प्रासांगिकता एवं उसकी वर्तमान आवश्यकता व उपयोगिता पर संगोष्ठी आयोजन के लिए डॉ0 राम जनम मौर्य को साधुवाद दिया। कार्यक्रम के सौहार्दपूर्ण वातावरण एवं पारिवारिक भाव–भावना से इस संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में विश्वविद्यालय परिवार के आपसी सहयोग की भावना की माननीय कुलपति जी ने बहुत प्रशंसा की और इसी कार्य संस्कृति की स्थापना के लिए डॉ0 मौर्य को साधुवाद दिया।

मा0 कुलपति जी ने अपनी बात को आगे बढाते हुए कहा कि सूचनाओं को संकलित करना और वांछनीय लोगों तक पहुँचाना पुस्तकालय विज्ञान का कार्य है। (Indian Talent + Information Technology (IT+IT) = IT (India Tomorrow) सूत्र वाक्य की चर्चा करते हुए संगोष्ठी के विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। साथ ही यह आशा व्यक्त की कि संगोष्ठी के विभिन्न आयामों पर जो चिन्तन और मंथन होगे और जो निष्कर्ष स्वरूप संस्तुतियां आयेंगी, वे समाज के लिए पुस्तकालयों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित कर सकेंगी। ऐसा विश्वास अध्यक्ष जी ने अपने उद्बोधन में व्यक्त किया। शैक्षिक एवं पढ़न–पाठन की गतिविधियों के अलावा डॉ0 टी0एन0 दुबे द्वारा किये गये अन्य कार्यों के सफल क्रियान्वयन करने के लिए उनके योगदान की भूरि भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर उन्होनें कहा कि सेवानिवृत्ति एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, इसे इसी रूप में लेना चाहिए। दुबे जी Retired है लेकिन Tired नहीं हैं। ये 63 वर्ष के युवा हैं और आगे की अपनी ऊर्जास्वी सेवाएं विश्वविद्यालय को हमेशा देते रहेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। इस अवसर

पर आपने यह भी बताया कि विश्वविद्यालय में ऐसी नीति का पालन किया जा रहा है जिससे शिक्षक/अधिकारी व कर्मचारीगणों को उनकी सेवानिवृत्ति से एक दिन पूर्व अनापत्ति प्रमाण पत्र–पेंशन, आदि के सभी कागज तैयार करके दे दिये जाँय।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र एवं इस सम्मान समारोह के संयुक्त आयोजन के अन्त में औपचारिक धन्यवाद विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक प्रो0 आशुतोष गुप्ता ने किया।

राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन डॉ0 ज्ञान प्रकाश यादव असि0 प्रोफेसर प्रबन्धन अध्ययन विद्याशाखा ने किया।